वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 385
ISBN-978-93-82071-68-6

श्री चन्द्रप्रभु विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में वैशाख कृ. त्रयोदशी से वैशाख शु. तृतीया-अक्षयतृतीय, 7 मई से 13 मई 2013, तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2539	मूल्य
1100 प्रतियाँ	वैशाख शु. तृतीया, 13 मई 2013	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–स्वस्तिश्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

प्रवचनसार ग्रंथ में आचार्य श्री कुन्दकुन्द ने कहा है-

जीव के शुभ, अशुभ परिणाम ही उसे तदनुसार फल प्रदान करते हैं। अशुभोपयोग से यह जीव तिर्यंच, नारकी एवं कुमानुष होकर सहस्रों दुःखों को सहन करता हुआ संसार परिभ्रमण करता है और धर्म से परिणत होकर शुभोपयोग से स्वर्ग सुख और शुद्धोपयोग से निर्वाण प्राप्त कर लेता है।

जीव के जब जन्म-जन्मान्तरों का पुण्य संचित होकर एक साथ उदय में आता है तो जिनधर्म एवं जिनवाणी सुनने का साधन प्राप्त होता है जिससे शुभोपयोग में जीव का समय व्यतीत होता है अन्यथा तो सभी संसारी प्राणी दिन रात अशुभोपयोग अर्थात् पाप क्रियाओं में संक्लेशित रहकर अपार कष्ट उठाते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि अशुभोपयोग से बचने के लिए प्रत्येक श्रावक को भगवान की भक्ति, पूजा, स्तोत्र पाठ, तीर्थयात्रा आदि करना चाहिए जो शुभोपयोग के अंग हैं। कुन्दकुन्दाचार्य के अनुसार श्रावक के लिए दान और पूजन दोनों आवश्यक कर्तव्य हैं। जिसमें पूजा के अन्तर्गत नित्य पूजाओं के अतिरिक्त नैमित्तिक पूजाओं में अनेकानेक मण्डल विधानादि की पूजाएँ की जाती हैं।

वर्तमान समय में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने सर्वप्रथम बालब्रह्मचारिणी के रूप में दीक्षा लेकर साहित्य लेखन का अनुपमेय कार्य किया जिसको हजारों वर्षों तक विस्मृत नहीं किया जा सकता है। अनेकों वृहद् विधान एवं लघु विधानों की धूम आज भारत के कोने-कोने में है। उन्हीं लघु विधानों की शृँखला में यह नूतन कृति ''श्री चन्द्रप्रभु विधान'' है। इस विधान के माध्यम से भक्तजन प्रभु भक्ति का दिव्य स्रोत प्रवाहित कर कर्मनिर्जरा करते हुए पुण्य का बंध करें, यही जिनेन्द्र भगवान से मंगल प्रार्थना है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

अनंतानंत तीर्थंकरों की शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या एवं शाश्वत निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर है परन्तु वर्तमान हुण्डावसर्पिणी काल के दोष से शाश्वत तीर्थ अयोध्या में मात्र पाँच ही तीर्थंकर जन्मे और सम्मेदशिखर से मात्र बीस तीर्थंकर ही निर्वाणधाम को गए। शेष तीर्थंकर भारतभूमि के अलग-अलग स्थानों पर जन्मे और 4 तीर्थंकर अलग-अलग स्थलों से मोक्ष पधारे। उनमें से वर्तमान चौबीसी के अष्टम तीर्थंकर भगवान चन्द्रप्रभ उत्तरप्रदेश में स्थित चन्द्रपुरी नगरी में महाराजा महासेन की महारानी लक्ष्मणा देवी से चैत्र कृष्णा पंचमी तिथि में जन्मे एवं फाल्गुन शुक्ला सप्तमी तिथि में सम्मेदशिखर जी सिद्धक्षेत्र से निर्वाणपद प्राप्त किया। आज भी सम्मेदशिखर की उस पावन भूमि में पर्वत पर भगवान चन्द्रप्रभु एवं भगवान पार्श्वनाथ की टोंक सबसे ऊँची मानी जाती है।

यह काल का ही प्रभाव है कि तीर्थंकर भगवान के जन्म से पवित्र वह चन्द्रपुरी नगरी उपेक्षित अवस्था में थी किन्तु बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी में जैन समाज के पुण्य से वर्तमान में सर्वप्राचीन दीक्षित, कुमारी कन्याओं की पथप्रदर्शिका और तीर्थंकरों की जन्मभूमियों के जीर्णोद्धार एवं विकास में सतत संलग्न परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के चरण उस भूमि पर पड़े और वह वीरान भूमि जनमानस की दृष्टि में आई। आज अनेक तीर्थों पर भगवान चन्द्रप्रभ की अतिशयकारी प्रतिमाएँ होने के कारण जैन धर्मावलम्बी उन-उन तीर्थों पर अपने कष्ट मिटाने तो जाते हैं लेकिन जन्मभूमि की ओर किसी की दृष्टि नहीं गई थी, यह माताजी की ही कृपा है कि लोग अब सभी जन्मभूमियों के दर्शनार्थ भी जाने लगे हैं।

भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ एवं अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर भी पूज्य माताजी की ही कृपा से आज विश्वविख्यात है जहाँ अनेकों सुंदर एवं अद्भुत जिनमंदिर निर्मित हुए हैं, उस शृँखला में ही भगवान चन्द्रप्रभु का नूतन जिनमंदिर भी निर्मित हुआ है जहाँ भक्त आकर अपनी मनोकामना की सिद्धि कर सकते हैं भगवान चन्द्रप्रभु की भक्ति में ही 300 ग्रंथों की रचयित्री, भक्ति विधान के क्षेत्र में एक कीर्तिमान स्थापित करने वाली पूज्य माताजी ने श्री चन्द्रप्रभु विधान नामक नूतन कृति की रचना की है, जिसमें एक समुच्चय पूजा, 108 अर्घ्य, 4 पूर्णार्घ्य और 2 जयमालाएँ हैं, जिसमें भगवान चन्द्रप्रभ की महिमा का वर्णन है। यह विधान प्रत्येक करने-कराने वालों के मनोरथों की सिद्धि में निमित्त बने, यही भगवान से प्रार्थना है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम– क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा- भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमामहावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थइत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डलविधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–जीवन प्रकाश जैन (प्रबंध सम्पादक)

ईसवी सन् 1972 में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित उक्त संस्था के द्वारा जम्बूद्वीप रचना के निर्माण हेतु मेरठ (उ.प्र.) के ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर में नशिया मार्ग पर जुलाई 1974 में एक भूमि क्रय की गई, जहाँ सर्वप्रथम 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण सात हाथ (सवा दस फुट) ऊँची खड्गासन प्रतिमा विराजमान करने हेतु फरवरी 1975 में एक लघुकाय जिनालय का निर्माण किया गया, जो सन् 1990 में एक अनोखे 'कमल मंदिर' के रूप में निर्मित हुआ है। यहाँ विराजमान कल्पवृक्ष भगवान महावीर से यह अतिशय क्षेत्र निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर होता हुआ नित्य नये निर्माणों के द्वारा संसार में अद्वितीय पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध हुआ है। इस प्रतिमा के दर्शन करके भक्तगण अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

जम्बूद्वीप निर्माण का प्रथम चरण–जुलाई सन् 1974 में रखी गई नींव के आधार पर जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में सर्वप्रथम आगम वर्णित सुमेरुपर्वत (101 फुट ऊँचा) का निर्माण अप्रैल सन् 1979 में एवं सन् 1985 में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण पूर्ण हुआ। सोलह जिनमंदिरों से समन्वित उस सुमेरुपर्वत के अंदर से निर्मित 136 सीढ़ियों से चढ़कर श्रद्धालु भक्त समस्त भगवन्तों के दर्शन करके जब सबसे ऊपर पाण्डुकशिला के निकट पहुँचते हैं, तो नीचे जम्बूद्वीप रचना के सभी नदी, पर्वत, मंदिर, उपवन आदि दृश्यों के साथ-साथ हस्तिनापुर के आसपास के सुदूरवर्ती ग्रामों का भी प्राकृतिक सौंदर्य देखकर फूले नहीं समाते हैं।

यात्री सुविधा–हस्तिनापुर तीर्थ में जम्बूद्वीप स्थल के पूरे परिसर में संस्थान द्वारा कार्यालय का सक्रिय संचालन किया जाता है। वहाँ यात्रियों के ठहरने हेतु आधुनिक सुविधायुक्त 200 कमरे, 50 से अधिक डीलक्स फ्लैट एवं अनेकों गेस्ट हाउस (बंगले) बने हुए हैं। इसके साथ ही यहाँ सुन्दर भोजनालय है जहाँ यात्रियों को सुविधापूर्वक शुद्ध भोजन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त 2 किमी. दूर हस्तिनापुर सेन्ट्रल टाउन में सरकारी अस्पताल, डाकखाना, बाजार, इंटरकालेज तथा अन्य शिक्षण संस्थाएँ आदि सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

हस्तिनापुर कैसे पहुँचे ?–भारत की राजधानी दिल्ली से 110 किमी. पश्चिमी उत्तरप्रदेश में जिला-मेरठ से 40 किमी. दूर हस्तिनापुर तीर्थ है। राजधानी दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए अंतर्राज्यी बस अड्डे अथवा आनंद विहार बस अड्डे से उत्तरप्रदेश रोडवेज तथा डी.टी.सी. बसों की निरंतर सेवा उपलब्ध है। मेरठ से भी प्रति आधे घंटे के अंतराल से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर पहुँचने हेतु रोडवेज की बसें सुलभता के साथ उपलब्ध रहती हैं। 'जम्बूद्वीप' के नाम से ये बसें चलती हैं जो सीधे जम्बूद्वीप के सामने ही रुकती हैं और जम्बूद्वीप से ही मेरठ, दिल्ली, तिजारा आदि यात्रा हेतु बसें उपलब्ध रहती हैं। दिल्ली और मेरठ के बीच रेल सेवा भी है। देश-विदेश के यात्रीगण हस्तिनापुर पधारकर इस धरती का स्वर्ग मानी जाने वाली 'जम्बूद्वीप रचना' के दर्शन करें और मानसिक शांति का अनुभव करते हुए मनवांछित फल प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।

तीर्थंकर चन्द्रप्रभ जन्मभूमि

चन्द्रपुरी तीर्थ

-आर्यिका चन्दनामती

गंगा के सुरम्य तट पर स्थित जैनधर्म के आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभ भगवान की जन्मभूमि चन्द्रपुरी वाराणसी से लगभग 24 किमी. दूर है। यहाँ की वन्दना से असीम आनन्दानुभूति होती है। यहाँ चन्द्रप्रभ तीर्थंकर के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान ये चार कल्याणक हुए थे इसलिए यह अत्यन्त प्राचीन तीर्थस्थान माना जाता है।

यहाँ एक प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर है एवं निकट में ही एक श्वेताम्बर जैन मंदिर है। दिगम्बर जैन मंदिर दूसरी मंजिल पर निर्मित है तथा इसके चारों ओर पुरानी धर्मशाला भी है।

मंदिर में गर्भगृह के द्वार पर इधर-उधर आलों में ''विजय यक्ष'' और अष्टभुजी यक्षिणी ''ज्वालामालिनी'' की मूर्तियाँ विराजमान हैं।

गंगा के तट पर स्थित होने के कारण इस मंदिर का विहंगम दृश्य अत्यन्त मनोहारी है। इसके जीर्णोद्धार एवं विकास की अत्यन्त आवश्यकता है।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का सन् 2002 एवं 2005 में संघ सहित चन्द्रपुरी में मंगल पदार्पण हुआ। तीर्थ के विकास की योजना विचाराधीन चल रही है।

तीर्थंकर जन्मभूमि तीर्थों के विकास की शृँखला में इसका शीघ्र विकास हो और भगवान चन्द्रप्रभ का चमत्कार विश्व में फैले यही जिनेन्द्र प्रभु से प्रार्थना है।

चन्द्रपुरी तीर्थ बनारस और गाजीपुर मार्ग पर स्थित है। इस पावन तीर्थ को शत-शत नमन।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में
तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ मंदिर निर्माण के पुण्यार्जक

श्री विजय जैन-दिल्ली का परिचय

श्री विजय कुमार जैन प्रारंभ से ही अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं। श्री सुमत प्रकाश जैन की ध.प. श्रीमती सेमवती जैन से 18 जनवरी 1962 में जन्में विजय कुमार जी पिछले 35 वर्षों से पूज्य माताजी के संघ से एवं दिगम्बर जैन त्रिलोक शोधसंस्थान से जुड़कर प्रत्येक धार्मिक गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। आपके धर्मपत्नी रश्मि जैन का भी आपके प्रत्येक कार्य में भरपूर सहयोग रहता है।

आपके दोनों सुपुत्र चि. वैभव जैन एवं चि. क्षितिज जैन भी धर्म में विशेष रुचि रखते हैं, दिल्ली जैसी आधुनिक नगरी में रहकर बच्चों में धर्म के संस्कार होना महत्त्वपूर्ण बात है, इसी प्रकार आपकी पुत्रवधू आकांक्षा जैन भी धर्म के प्रति विशेष लगनशील हैं।

आपके द्वारा सन् 1990 में चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों से समन्वित ह्रीं प्रतिमा (जम्बूद्वीप परिसर में निर्मित ध्यान मंदिर में विराजमान) का निर्माण किया गया तथा सन् 2003 में आपने पूज्य माताजी की प्रेरणानुसार भगवान महावीर स्वामी की निर्वाणभूमि पावापुरी में जलमंदिर के सामने निर्मित पांडुकशिला परिसर में भगवान महावीर स्वामी की लालवर्णी प्रतिमा स्थापित की और उसकी उल्लासपूर्ण वातावरण में मध्यमरूप में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न की। अकम्पनाचार्य आदि सात सौ मुनिराजों की मूर्तियाँ (पाषाण शिला में) आपके सौजन्य से स्थापित हुईं पुनः अब आपकी ध.प. श्रीमती रश्मि जैन की विशेष इच्छानुसार जम्बूद्वीप परिसर में भगवान चन्द्रप्रभु मंदिर का निर्माण होकर उसमें भगवन चन्द्रप्रभु स्वामी की 9 फुट उत्तुंग विशाल पद्मासन प्रतिमा विराजमान हुई हैं जिसमें श्री विजय जैन व रश्मि जैन ने सौधर्म इन्द्र व शचि इन्द्राणी बनकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न की। इस अवसर पर पूज्य माताजी द्वारा अल्प अवधि में रचित इस 'चन्द्रप्रभ विधान' को प्रकाशित करने का सौभाग्य भी आपको प्राप्त हुआ है। आपने भावना व्यक्त की है कि हमेशा यह चन्द्रप्रभ विधान हमारी प्रेस से ही प्रकाशित होता रहेगा।

इस प्रकार धार्मिक संस्कारों से समन्वित विजय कुमार जी व उनका समस्त परिवार आगे भी प्रत्येक धर्म कार्यों में निरन्तर अग्रसर रहते हुए देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति में हमेशा तत्पर रहे, यही मंगलकामना है।

श्री चन्द्रप्रभ विधान

मंगलाचरण

चन्द्रप्रभो वागमृतांशुभिर्यो, जनान् प्रपुष्यन्नकलंकयुक्तः।
न चापि दोषाकरतां प्रयाति, सदा स्तुवे तं भवतापशून्यं।।

तीर्थंकर चन्द्रप्रभदेव परिचय

इस मध्यलोक के पुष्कर द्वीप में पूर्व मेरु के पश्चिम की ओर विदेह क्षेत्र में सीतोदा नदी के उत्तर तट पर एक 'सुगन्धि' नाम का देश है। उस देश के मध्य में श्रीपुर नाम का नगर है। उसमें इन्द्र के समान कांति का धारक श्रीषेण राजा राज्य करता था। उसकी पत्नी धर्मपरायणा श्रीकांता नाम की रानी थी। वे दम्पत्ति पुत्र रहित थे अतः पुरोहित के उपदेश से पंच वर्ण के अमूल्य रत्नों से जिनप्रतिमायें बनवाईं, आठ प्रातिहार्य आदि से विभूषित इन प्रतिमाओं की विधिवत् प्रतिष्ठा करवाई, पुनः उनके गंधोदक से अपने आपको और रानी को पवित्र किया और आष्टान्हिक महापूजा विधि की। कुछ दिन पश्चात् रानी ने उत्तम स्वप्नपूर्वक गर्भधारण किया पुनः नवमास के बाद पुत्र को जन्म दिया। बहुत विशेष उत्सव के साथ उसका नाम 'श्रीवर्मा' रखा गया।

किसी समय 'श्रीपद्म' जिनराज से धर्मोपदेश को ग्रहण कर राजा श्रीषेण पुत्र को राज्य देकर दीक्षित हो गए। एक समय राजा श्रीवर्मा भी आषाढ़ मास की पूर्णिमा के दिन जिनपूजा महोत्सव करके अपने परिवारजनों के साथ महल की छत पर बैठे थे कि आकस्मिक उल्कापात देखकर विरक्त होकर श्रीप्रभ जिनेन्द्र के समीप दीक्षा लेकर श्रीप्रभ पर्वत पर संन्यास-मरण करके प्रथम स्वर्ग में श्रीप्रभ विमान में श्रीधर नाम का देव हो गए।

धातकीखंड द्वीप की पूर्व दिशा में जो इष्वाकार पर्वत है उसके दक्षिण की ओर भरत क्षेत्र में एक 'अलका' देश है। उसमें अयोध्या नगर है उस नगर के अजितंजय

राजा की अजितसेना रानी ने किसी समय उत्तम स्वप्न देखे और नवमास बाद श्रीधर देव को जन्म दिया। उसका नाम 'अजितसेन' रखा गया। पुण्य के उदय से अजितसेन ने चक्रवर्ती के चक्ररत्न और वैभव को प्राप्त कर लिया। श्रद्धा आदि गुणों से सम्पन्न राजा ने किसी समय एक मास का उपवास करने वाले अरिन्दम साधु को आहार दान देकर महान पुण्य बन्ध कर लिया था। दूसरे दिन वह राजा गुप्तप्रभ जिनेन्द्र की वन्दना के लिए मनोहर नामक उद्यान में गया। भगवान के मुख से अपने पूर्व भव सुनकर विरक्त होकर जैनेश्वरी दीक्षा ले ली। आयु के अन्त में नभस्तिलक पर्वत के अग्रभाग पर शरीर छोड़कर सोलहवें स्वर्ग में इन्द्र हो गए।

पूर्व धातकीखंड द्वीप में सीता नदी के दाहिने तट पर एक मंगलावती नाम का देश है। इसके रत्नसंचय नगर में कनकप्रभ राजा राज्य करते थे उनकी कनकमाला रानी थी। वह अच्युतेन्द्र वहाँ से आकर इन दोनों के पद्मनाभ नाम का पुण्यशाली पुत्र हुआ। किसी समय पद्मनाभ राजा श्रीधर मुनि के समीप धर्मोपदेश श्रवण कर दीक्षित हो गये, सोलहकारण भावनाओं का चिन्तवन कर ग्यारह अंग में पारंगत होकर सिंहनिष्क्रीडित आदि कठिन-कठिन तप करने लगे। तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध करके आयु के अन्त में विधिवत् मरण करके वैजयन्त विमान में अहमिन्द्र होगये। इनके श्रीवर्मा, श्रीधरदेव, अजितसेन चक्रवर्ती, अच्युतेन्द्र, पद्मनाभ, अहमिन्द्र, चन्द्रप्रभ भगवान ये सात भव प्रसिद्ध हैं।

पंचकल्याणक वैभव—अनन्तर जब इनकी छह माह की आयु बाकी रह गई तब जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में चन्द्रपुर नगर के महासेन राजा की लक्ष्मणा महादेवी के यहाँ रत्नों की वर्षा होने लगी। चैत्र कृष्ण पंचमी के दिन गर्भकल्याणक महोत्सव हुआ एवं पौष कृष्ण एकादशी के दिन भगवान चन्द्रप्रभ का जन्म हुआ। किसी समय दर्पण में अपना मुख देख रहे थे कि भोगों से विरक्त होकर देवों द्वारा लाई गई 'विमलाभ' नाम की पालकी पर बैठकर सर्वर्तुक वन में गये। वहाँ पौष कृष्ण एकादशी के दिन हजार राजाओं के साथ दीक्षा ले ली। पारणा के दिन नलिन नामक नगर में सोमदत्त के यहाँ आहार हुआ था। तीन माह का छद्मस्थ काल व्यतीत कर भगवान दीक्षावन में नागवृक्ष के नीचे फाल्गुन कृष्णा सप्तमी के दिन केवलज्ञान को प्राप्त हो गये। ये चन्द्रप्रभ भगवान समस्त आर्य देशों में विहार कर धर्म की प्रवृत्ति करते हुए सम्मेदशिखर पर पहुँचे। एक माह तक प्रतिमायोग से स्थित होकर फाल्गुन शुक्ला सप्तमी के दिन ज्येष्ठा नक्षत्र में सायंकाल के समय शुक्लध्यान के द्वारा सर्वकर्म को नष्ट कर सिद्धपद को प्राप्त हो गये।

श्री चन्द्रप्रभ विधान प्रारंभ

मंगलाचरण

-भुजंग-प्रयातं छंदः-

मुनीनां मनोवार्धिराकासुधांशुः।
मनोभूविजेता मनोध्वांतहारी।।
चलच्चित्तसंचारहान्यै सदा तं।
मुदा स्तौमि चन्द्रप्रभं चंद्रकांतं।।1।।

भवव्याधिशान्त्यै स सर्वोषधिः स्यात्।
सुकैवल्यबोधाधिनाथः कलाभृत्।।
महामोहनैशांध-कारांशुमाली।
श्रितानां यशोवार्धिपूर्णैकचन्द्रः।।2।।

शशांकांघ्रिसेव्यः परां शांतिमाप्तः।
भवेद्भव्यजंतोर्भवाग्निप्रशान्त्यै।।
यतीनां मनो-ऽम्भोजभास्वान् प्रभुस्तं।
सुचंद्रप्रभं नौमि चंद्रांशुगौरं।।3।।

प्रभो! त्वां विलोक्य प्रहृष्टं मनो मे।
ध्वनिर्गद्गदो मोदवाष्पस्रवंत्यौ।।
दृशो स्तश्च साफल्य-जन्मापि मेऽभूत्।
अतः कुड्मलीकृत्य हस्तौ प्रणौमि।।4।।

-शिखरिणी छंदः-

शरीरी प्रत्येकं भवति भुवि वेधाः स्वकृतितः।
विधत्ते नानाभू-पवन-जल-वन्हि-द्रुमतनुं।।
त्रसो भूत्वा भूत्वा कथमपि विधायात्र कुशलं।
स्वयं स्वस्मिन्नास्ते भवति कृतकृत्यः शिवमयः।।5।।

जिनपते! दुरितंजय! सौम्यभृत्!,
स्मरजयिन्! करुणाह्रद! कर्मभित्।
त्रिभुवनाधिप! मे हृदि तिष्ठ भोः।!,
अव भवाद् भवि-कैरवचंद्रमः!।।6।।

जिनरवे! जिनचंद्र! जिनेन्द्र! हे!
कुरु कृपां शरणागतवत्सल!
भवत उद्धर हे जिनपुंगव!
भव भवोदधितारक! पाहि मां।।7।।

सुरकृता सुमवृष्टिरिति त्वयि,
उडुगणश्च पतन् किमु भाति खात्।
तव पदाम्बुजभक्तिसुमावलिः,
शिवसुखाय मयापि समर्प्यते।।8।।

।।अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री चन्द्रप्रभ जिनपूजा

–अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद –

अर्धचन्द्र सम सिद्ध शिला पर, श्रीचन्द्रप्रभ राजें।
चन्द्रकिरण सम देह कांति को, देख चन्द्र भी लाजे।।
अतः आपके श्रीचरणों में, हुआ समर्पित चंदा।
आह्वानन कर चन्द्रप्रभू का, मेरा मन आनंदा।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-नरेन्द्रछंद –

गंगा सरिता का निर्मल जल, रजत कलश भर लाऊँ।
श्री चन्द्रप्रभ चरण कमल में, धारा तीन कराऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन केशर घिस, गंध सुगंधित लाऊँ।
जिनवर चरण कमल में चर्चूं, निजानंद सुख पाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रकिरणसम उज्ज्वल तंदुल, लेकर पुंज रचाऊँ।
अमल अखंडित सुख से मंडित, निजआतम पद पाऊँ।।

मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्ली बेला कमल केवड़ा, पुष्प सुगंधित लाऊँ।
जिनवर चरण कमल में अर्पूं, निजगुण यश विकसाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृतपिंड सदृश चरु ताजे, घेवर मोदक लाऊँ।
जिनवर आगे अर्पण करते, सब दुःख व्याधि नशाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक में ज्योति जलाकर, करूँ आरती भगवन्।
निज घट का अज्ञान दूर हो, ज्ञानज्योति उद्योतन।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर चंदन से मिश्रित, धूप सुगंधित लाऊँ।
अशुभ कर्म के दग्ध हेतु मैं, अग्नी संग जलाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम अंगूर सरस फल, लाके थाल भराऊँ।
जिनवर सन्निध अर्पण करते, परमानंद सुख पाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमावलि, आदिक अर्घ बनाऊँ।
उसमें रत्न मिलाकर अर्पूं, 'ज्ञानमती' निधि पाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

पद्मसरोवर नीर से, चन्द्रप्रभ चरणाब्ज।
त्रयधारा विधि से करूँ, मिले शांति साम्राज्य।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जुही गुलाब सुगंधियुत, वर्ण वर्ण के फूल।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य अनुकूल।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–गीताछंद –

जिनचंद्र विजयंते अनुत्तर, से चये आये यहाँ।
महासेन पितु माँ लक्ष्मणा के, गर्भ में तिष्ठे यहाँ।।
शुभ चंद्रपुरि में चैत्रवदि, पंचमि तिथी थी शर्मदा।
इंद्रादि मिल उत्सव किया, मैं पूजहूँ गुणमालिका।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णापंचम्यां श्रीचंद्रप्रभतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्र जिनवर पौष कृष्णा, ग्यारसी शुभयोग में।
जन्में उसी क्षण सर्व बाजे, बज उठे सुरलोक में।।

तिहुँलोक में भी हर्ष छाया, तीर्थंकर महिमा महा।
सुरशैल पर जन्माभिषव को, देखते ऋषि भी वहाँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदर्श में मुख देखकर, वैराग्य उपजा नाथ को।
वदि पौष एकादशि दिवस, इंद्रादि सुर आये प्रभो।।
पालकी विमला में बिठा, सर्वर्तुवन में ले गये।
स्वयमेव दीक्षा ली किया, बेला जगत वंदित हुए।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी सप्तमि तिथी, सर्वर्तुवन में आ गये।
तरु नाग नीचे ज्ञान केवल, हुआ सुरगण आ गये।।
धनपति समवसृति को रचा, श्रीचंद्रप्रभ राजें वहाँ।
द्वादशगणों के भव्य जिनध्वनि, सुनें अति प्रमुदित वहाँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चंद्रजिन फाल्गुन सुदी, सप्तमि निरोधा योग को।
सम्मेदगिरि से मुक्ति पायी, जजें सुरपति भक्ति सों।।
हम भक्ति से श्रीचंद्रप्रभ, सम्मेदगिरि को भी जजें।
निज आत्म संपति दीजिए, इस हेतु ही प्रभु को भजें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनशुक्लासप्तम्यां श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्यं (दोहा) –

चंद्रप्रभू की कीर्ति है, चंद्रकिरण सम श्वेत।
पूजूँ पूरण अर्घ्य ले, मिले भवोदधि सेतु।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचंद्रप्रभपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(मंडल पर 108 अर्घ्य)

-सोरठा-

गुण अनंत भंडार, नाम असंख्यों धारते।
स्वात्म सौख्य कर्तार, पुष्पांजलि से पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

-शंभु छंद-

'श्रीमान्' आप अन्तर अनन्त सुख, ज्ञान वीर्य दर्शन श्रीपति।
बहिरंग समवसरणादि महा-वैभव प्रातिहार्यमयी श्रीपति।।
इन अन्तरंग बहिरंग श्री के, स्वामी प्रभु श्रीमान् बनें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमन्नामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'स्वयंभू' हुये प्रभु, निज में निज ज्ञान प्रगट करके।
नहिं गुरू की तनिक अपेक्षा थी, निज को गुरू स्वयं बना करके।।
निज द्वारा निज को निज में ध्या, स्वयमेव स्वयंभू आप बनें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभूनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वृषभ' धर्मघन मेघ सतत्, दिव्यध्वनि वर्षा करते हैं।
'वृष' धर्म अहिंसा लक्षण से, 'भा' शोभित होते रहते हैं।।
अथवा भक्तों के लिये सदा, इच्छित वर्षा कर वृषभ बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषभनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंभव' शं-सुख भव-हो तुमसे, इससे शंभव कहलाते हो।
अथवा 'संभव' सं-समीचीन, भव-जन्म धरा मुस्काते हो।।

हे संभव शांतमूर्ति प्रभु तुम, वंदन करते हम शांत बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं शंभवनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शम्भू' शं-परमानन्दरूप, सुख देने वाले आप प्रभो।
इंद्रिय विषयों से रहित अतीन्द्रिय, सौख्य सुधारस तीन विभो।।
परमानन्दामृत पीने की, शक्ती दीजे हे नाथ! हमें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं शंभूनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा से हुये 'आत्मभू' हैं, आत्मा शुध बुद्ध स्वभावी है।
चिच्चमत्कार लक्षण परमैक, ब्रह्ममय सौख्य स्वभावी है।।
टंकोत्कीर्ण स्फटिकमणी, आत्मा भू-धरा पाइ तुमने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं आत्मभूनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'स्वयंप्रभ' आप स्वयं, प्रकृष्ट शोभते रहते हैं।
निज प्रभा-कांति से त्रिभुवन को भी, आप प्रकाशित करते हैं।।
मेरी निज आत्मप्रभा मुझको, मिल जावे गुणमणि तेज घने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आप 'प्रभु' हो सबके, स्वामी होने से इस जग में।
परिपूर्ण समर्थ नाथ तुम ही, भक्तों के मनरथ भरने में।।
मैं स्वयं समर्थ बनूँ निज को, पाने में सब पुरुषार्थ बनें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभुनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भोक्ता' प्रभु आप सदा परमानंद-सुख के अनुभव कर्ता हैं।
निज के अनंत दृग ज्ञान वीर्य, सुखरूप चतुष्टय भर्ता हैं।।

निज आत्मा से उत्पन्न परम, आह्लाद सौख्य हो प्राप्त हमें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं भोक्तृनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

हे नाथ 'विश्वभू' केवलज्ञान, अपेक्षा व्याप्त विश्व में हो।
अभवा भू-मंगल करें विश्व का, या वृद्धी भी करते हो।।
भू गत्यर्थक-ज्ञानार्थक है, त्रैलोक्य ज्ञान है नाथ तुम्हें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभूनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह

'अपुनर्भव' नाथ पुनर्भव नहिं, प्रभु जन्म मरण से छूट चुके।
अथवा भव-रुद्र विष्णु ब्रह्मा, इन देवरूप नहिं हो सकते।।
अर्हत सर्वज्ञ आप भगवन्, नहिं पुनर्जन्म धरते जग में।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं अपुनर्भवनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वात्मा' आप विश्व को निज, सदृश गिनते विश्वात्मा हैं।
या विश्व-सुकेवल ज्ञानमयी, आत्मा-स्वरूप विश्वात्मा हैं।।
त्रिभुवन स्थित प्राणीगण को, निज सदृश गिना सु दयालु बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वात्मन्नामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'विश्वलोकेश' विश्वके-तीन लोक के जीवों के।
प्रभु ईश-नाथ बस एक आप, नहिं अन्य कोई भी बन सकते।।
जो खुद की रक्षा कर न सके, वो जग के ईश कभी न बनें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वलोकेशनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'विश्वतश्चक्षु' आप, सब विश्व-लोक में व्याप्त हुआ।
चक्षू-केवलदर्शन प्रभु का, इससे प्रभु ने सब देख लिया।।

श्रुतचक्षू से केवलचक्षू, पाया जगदर्शी आप बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतश्चक्षुर्नामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अक्षर' प्रभु क्षरण न होता है, नहिं चलित आप हो सकते हैं।
या अक्ष-इन्द्रियों को मन को, वश में कर अक्षर बनते हैं।।
तुम नाम स्तुति करते करते, मेरा भी अक्षर नाम बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षरनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'विश्ववित्' ज्ञानरश्मि, से विश्व माहिं सुप्रविष्ट हुये।
सब विश्व-चराचर जग जाना, अतएव विश्ववित् प्रगट हुये।।
यह आत्मा ज्ञानस्वभावी है, मुझ अल्पज्ञान भी पूर्ण बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्ववित्नामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'विश्वविद्येश' आपकीद्ध विद्या विश्वा-सकला है।
वह सकल विमल कैवल्य ज्ञानमय, पूर्ण स्वरूप अविकला है।।
तुम गुण गा-गा कर भव्य जीव, सब विद्याओं के ईश बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविद्येशनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वयोनि' सम्पूर्ण पदार्थों, की उत्पत्ति के कारण हो।
संपूर्ण पदार्थों के उपदेशक, विश्वयोनि जगतारण हो।।
तुम नाम मंत्र जपते जपते, भाक्तिकजन तुम सम नाथ बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वयोनिनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'अनश्वर' कभी नाश, नहिं हो सकता युग युग तक भी।
आत्मा के नाशक गुणघातक, कर्मों का नाश किया है भी।।
प्रभु मुझे अनश्वर पद दे दो, इस हेतु वंदना करूँ तुम्हें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनश्वरनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'विश्वदृश्वा' हो जग को, इक क्षण में ही देख लिया।
तुम गुणस्तुति करते करते, भव्यों ने तुमको देख लिया।।
मैं भी तुमको अवलोकन कर, निज को देखूँ यह युक्ति बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदृश्वानामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विभु' आप विशेष करें मंगल, भवि के तारन में समरथ हैं।
निज समवसरण में प्रभू राजते, लोकालोक विजानत हैं।।
निज केवलज्ञानकिरण से लोका-लोक व्याप्त कर विभू बनें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं विभुनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धाता' चहुंगति में पड़े जीव को, निकाल कर मुक्तीपद में।
धर देते अथवा सर्व प्राणियों, का पालन करते जग में।।
प्रभु परम कारुणिक आप, सर्व रक्षा कर धाता स्वयं बनें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं धातृनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वेश' विश्व-त्रैलोक्य ईश-स्वामी त्रिभुवन के रक्षक हो।
उपदेश अहिंसामयी दिया, सबके बंधू प्रतिपालक हो।।
प्रभु धर्म आपका विश्वधर्म, भवसागरतारण सेतु बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेशनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'विश्वलोचन' त्रिभुवन, प्राणी के चक्षु समान कहें।
सबको हित का उपदेश दिया, इस कारण सबके नेत्र कहें।।
अथवा सब जग का इक क्षण में, अवलोकन करते आप घने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वलोचननामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'विश्वव्यापी' कण-कण, में ज्ञान आपका व्याप रहा।
त्रिभुवन के सर्व पदार्थ आप, जानें ऐसा विज्ञान लहा।।
नहिं आत्मप्रदेशों में व्यापक, तन में ही रहें प्रदेश घने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ, मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वव्यापिनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-हरिगीतिका छंद-

'विधु' आप कर्म विधान करते, कर्मविधि बतलावते।
निजज्ञान केवल किरण से, मोहान्धकार भगावते।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं विधुनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'वेधा' धर्म की, सृष्टी करें सुखहेतु हैं।
जिनधर्म तीर्थ चलावते, इस हेतु भवदधि सेतु हैं।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेधानामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम 'शाश्वत' धारते, शाश्वत विराजें मोक्ष में।
निज भक्त को शाश्वत परम-पद दे रहे हैं लोक में।।

निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वतनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वतोमुख' समवसृति में, चारदिश चउमुख दिखे।
या जल सदृश भवि पाप कीचड़, धोय स्वच्छ सु कर सकें।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतोमुखनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वकर्मा' कर्मभूमि, की व्यवस्था के समय।
असि मषि प्रभृति सब क्रिया, उपदेशी सभी को उस समय।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वकर्मानामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'जगज्जेष्ठ' त्रिलोक में, भी ज्येष्ठ-श्रेष्ठ महान हैं।
तुमसे बड़ा नहिं और कोई, अतः सर्व प्रधान हैं।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगज्जेष्ठनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वमूर्ति' अनंत गुणमय, देहधारी आप हैं।
या सर्व वस्तु ज्ञान दर्पण, में झलकते साफ हैं।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वमूर्तिनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन्! 'जिनेश्वर' भव्य, सम्यग्दृष्टि मुनिगण आदि के।
ईश्वर कहाते आप इस, हेतू जिनेश्वर सार्व के।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनेश्वरनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वदृक्' संसार की, सब वस्तु सत्तामात्र से।
अवलोकते हैं आप नित, प्रति सर्वदर्शी नाम से।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदृक्नामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वभूतेशा' तुम्हीं, सब प्राणिगण के ईश हैं।
या विश्वभू-त्रैलोक्य लक्ष्मी, ईश सब भूतेश हैं।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभूतेशनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वज्योती' विश्व के लोचन जगत में ख्यात हैं।
प्रभु आप केवलज्ञान ज्योती, सर्व जग में व्याप्त हैं।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वज्योतिनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन्! 'अनीश्वर' आप सम, नहिं अन्य ईश्वर लोक में।
प्रभु ईश सबके आप नहिं, कोइ आपका प्रभु लोक में।।

निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनीश्वरनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन आप घाती कर्मशत्रू, जीतकर 'जिन' हो गये।
मन इंद्रियों को जीतकर, 'जिन' नाम सार्थक कर दिये।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिननामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'जिष्णु' तुम कर्मारि जीतन, का स्वभाव प्रसिद्ध है।
जयशील शासन आपका, जग में सदैव विशुद्ध है।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिष्णुनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अमेयात्मा' आपमें, आनन्त्य गुण अतिशय भरे।
नहिं जान सकता अन्य कोई, माप नहिं सकता खरे।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमेयात्मानामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वरीश' तुम्हीं मही के, ईश जग में ख्यात हैं।
इस हेतु भविजन नित्य ही, तुम को नमाते माथ हैं।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरीशनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'जगत्पति' त्रैलोक्य के, स्वामी भविक त्राता तुम्हीं।
रक्षा करो सब द्वंद्व से, सुख शांति होवे आज ही।।

निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पतिनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आप 'अनंतजित्', मिथ्यात्व आदी जीत के।
प्रभु नाम सार्थक कर दिया, संसार अनंत सुजीत के।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतजित्नामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अचिन्त्यात्मा' तुम स्वरूप, अचिन्त्य जन मन वचन से।
नहिं चिंतवन कर सके कोई, आप आत्मा चित्त से।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यात्मन्नामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'भव्यबंधू' भव्य जन के, बंधु उपकारक तुम्हीं।
जो रत्नत्रय के योग्य हैं, उनके हितंकर हो तुम्हीं।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं भव्यबंधुनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन्! 'अबंधन' कर्म बंधन, से रहित गुणखान हो।
सब मोहद्वय आवरण विघ्न विघात कर जग मान्य हो।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं अबंधननामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन् 'युगादीपुरुष' चौथे, काल युग की आदि में।
ऋषभेश ने शिवपथ कहा, वो ही कहा प्रभु आपने।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं युगादिपुरुषनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मा' सुकेवल ज्ञान आदिक, गुण सुवृद्धिंगत हुये।
निज शुद्ध आत्मजनित सुखामृत, तृप्त ब्रह्मा तुम हुये।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मानामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'पंचब्रह्मामय' सु पाँचों, ज्ञानमय विख्यात हो।
या पंचपरमेष्ठीस्वरूप, अनंत गुण से सार्थ हो।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचब्रह्मामयनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिव' मोक्ष हो आनंदमय, हो सर्व दोष विहीन हो।
निर्वाण अक्षय शांत परम, कल्याण पद में लीन हो।।
निज ज्ञानज्योती प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिवनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोला छंद

प्रभु 'पर' नाम सुआप, सब जीवों को पालें।
ज्ञान आदि गुण सर्व, पूरण करने वाले।।

नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं परनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परतर' नाम धरंत, सबसे श्रेष्ठ तुम्हीं हो।
हित उपदेश करंत, प्रभु सर्वेश तुम्हीं हो।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं परतरनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूक्ष्म' आप मन इंद्रिय, इनके विषय नहीं हो।
केवलज्ञान अतीन्द्रय, उनके विषय सही हो।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमेष्ठी' प्रभु परम, उत्तम पद में तिष्ठो।
अर्हत सिद्धाचार्य आदि पाँच पद तिष्ठो।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमेष्ठिन्नामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम 'सनातन' आप, सदा एक से रहते।
सदा सदा विद्मान, रूप पुरातन धरते।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं सनातननामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयंज्योति' प्रभु आप, स्वयं आत्मा ज्योती।
चक्षू जगत्प्रकाश, स्वयं सूर्यमय ज्योती।।

नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंज्योतिर्नामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! आप 'अज' नाम, जग में नहिं उत्पत्ती।
सदा जपूँ तुम नाम, मिले निजातम शक्ती।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अजन्मा' आप, जन्म कभी नहिं धारो।
गर्भवास नहिं आप, मेरा जन्म निवारो।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजन्मानामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मयोनि' प्रभु आप, द्वादशांगमय वेदा।
इनकी उत्पति आप, से होती बिन खेदा।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मयोनिनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अयोनिज' आप, योनी लाख चुरासी।
इनमें नहिं उत्पाद, हरो सकल दुख राशी।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं अयोनिजनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मोहारीविजयीश', मोहशत्रु को जीता।
या अरि मोह के आप, विजयशील शिवनीता[1]।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोहारिविजयिन्नामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु मल्ल को जीत, 'जेता' आप कहाये।
सर्व जगत के मीत[2], कर्मशत्रु जय पाये।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं जेतानामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मचक्र के ईश, श्रीविहार कर जग में।
भव्यों को संबोध, 'धर्मचक्रि' त्रिभुवन में।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रिनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'दयाध्वज' आप, दया ध्वजा फहरायी।
अथवा दया सुमार्ग, प्रगटाया सुखदायी।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं दयाध्वजनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशान्तारि' प्रभु आप, कर्म शत्रु बलवंता।
उनको किया प्रशांत, पूर्ण शांत भगवंता।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्तारिनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. प्राप्त किया। 2. मित्र।

नाथ 'अनन्तात्मा', अनंत केवलज्ञानी।
या अनंत अविनाश, अंतरहित शिवगामी।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तात्मानामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगी' चित्त निरोध, करके निज को ध्याया।
मन वच तन कर शुद्ध, परम समाधि लगाया।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगीनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगी मुनि के ईश, गणधर से भी अर्चित।
'योगिश्वरार्चित' गीत, तीन भुवन में चर्चित।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगिश्वरार्चितनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'ब्रह्मवित्' आप, ब्रह्म-आत्म को जाना।
उसका अनुभव-स्वाद, कर लीना शिव थाना।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मवित्नामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'ब्रह्मतत्त्वज्ञ' आत्मतत्त्व के ज्ञानी।
ज्ञान दया का मर्म, जान हुये निज ज्ञानी।।

नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मतत्त्वज्ञनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मोद्याविद्' आप, ब्रह्म विद्या के वेत्ता।
आत्म विद्या के नाथ, त्रिभुवन के गुरु नेता।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मोद्याविद्नामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'यतीश्वर' आप, यतियों के ईश्वर हो।
रत्नत्रय में यत्न, करें यती उन गुरु हो।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं यतीश्वरनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुद्ध' आप रागादि, भाव कर्ममल रहिता।
स्फटिकमणी सम नाथ, करो मुझे मल रहिता।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बुद्ध' आप संपूर्ण, वस्तु जानते ज्ञानी।
केवलज्ञान सुबुद्धि, पायी अंतर्यामी।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रबुद्धात्मा' आप, सदा आपकी आत्मा।
शुद्ध ज्ञान से जग-मगती सर्व गुणात्मा।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रबुद्धात्मानामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-चौपाई-

नाम 'सिद्धार्थ' धरें जगसिद्धा। सर्व प्रयोजन हुये सुसिद्धा।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धार्थनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सिद्धशासन' तुम जग में। शासन सर्व हितंकर सच में।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धशासननामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सिद्ध' निजगुणमणि नंते। प्राप्त किया शिवगामी संते।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सिद्धांतविद्' सर्वप्रकाशी। द्वादशांग जानो निज भासी।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धांतविद्नामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ध्येय' आप मुनिगण आराध्या। योगिध्यान के ध्येय सुसाध्या।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं ध्येयनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्धसाध्य' प्रभु के सब कार्या। सिद्ध हो चुके हैं निरबाध्या।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसाध्यनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'जगद्धित' जग हितकर्ता। सबके लिए 'पथ्य' सुखभर्ता।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धितनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सहिष्णु' गुण क्षमा धरे हो।सहनशील हो सौख्य भरे हो।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हं सहिष्णुनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अच्युत' निज स्वभाव से च्युत ना। ज्ञानादिकगुणयुत परमात्मा।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।84।।

ॐ ह्रीं अर्हं अच्युतनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अनंत' अन्तक से रहिता। गुण अनंत सुख आदिक सहिता।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रभविष्णू' बहु प्रभावशाली। शक्ति अनंती समरथशाली।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।86।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभविष्णुनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'भवोद्भव' भव सब श्रेष्ठा। पंचविद्या संसार विनष्टा।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।87।।

ॐ ह्रीं अर्हं भवोद्भवनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'प्रभूष्णु' सब शक्तीशाली। इंद्रादिक के प्रभु गुणमाली।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।88।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूष्णुनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अजर' वृद्ध नहिं होते कबहूँ। सर्व दुःख नाशो मुझ अबहूँ।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।89।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजरनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अजर्य' नाम के धारी। तुम गुण जीर्ण न हों अविकारी।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।90।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजर्यनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भ्राजिष्णू' ज्ञानादि गुणों से। अतिशय दीप्तमान् निज गुण से।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।91।।

ॐ ह्रीं अर्हं भ्राजिष्णुनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धीश्वर' केवलज्ञानमयी जो। बुद्धी उसके ईश्वर प्रभु हो।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।92।।

ॐ ह्रीं अर्हं धीश्वरनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अव्यय' व्यय नहिं नाथ तुम्हारा। शिवपद प्राप्त किया सुखकारा।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।93।।

ॐ ह्रीं अर्हं अव्ययनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मेंधन को अग्नि समाना। 'विभावसू' तमहर रवि माना।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।94।।

ॐ ह्रीं अर्हं विभावसुनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुनि उत्पन्न जगत में नहिं हो। 'असंभूष्णु' मुझ जन्मविलय हो।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।95।।

ॐ ह्रीं अर्हं असंभूष्णुनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयंभूष्णु' स्वयमेव हुये हो। सिद्ध अवस्था प्राप्त किये हो।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।96।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभूष्णुनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'पुरातन' बहु प्राचीना। द्रव्यदृष्टि से आदि विहीना।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।97।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुरातननामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमात्मा' अतिशय उत्कृष्टा। परम ज्ञानसुख गुणमणि निष्ठा।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।98।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मानामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमोत्कृष्ट ज्योतिमय ज्ञानी। 'परंज्योति' गुणमणि रजधानी।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।99।।

ॐ ह्रीं अर्हं परंज्योतिनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन जगत् के परमेश्वर हो। 'त्रिजगत्परमेश्वर' तुम हो।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ। परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।100।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्परमेश्वरनामविभूषिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पृथ्वी छंद-

जिनेंद्र! भुवि 'धर्मदेशक' तुम्हीं सुधर्माब्धि हो।
मुझे स्वपर भेदज्ञानमय धर्म दीजे अबे।।

जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।101।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मदेशकनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुभंयु' शुभ युक्त हो प्रभु सुखामृताम्भोधि हो।
मुझे शुभमयी करो तुरत शुद्ध आत्मा बने।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।102।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुभंयुनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेंद्र! 'सुखसाद्भूत' अनुपं सुखाधीन हो।
अनंत सुख दो मुझे गुणसमूह से पूर्ण जो।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।103।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुखसाद्भूत्नामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! तुम 'पुण्यराशि' शुभ पुण्य भंडार हो।
पवित्र निज को किया मुझ पवित्र आत्मा करो।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।104।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यराशिनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनामय' प्रभो! तुम्हें सकल व्याधि पीड़ा नहीं।
समस्त तनु रोग नाश भव व्याधि मेरी हरो।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।105।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनामयनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेंद्र! तुम 'धर्मपाल' जिन धर्म को रक्षते।
अनंत जिनधर्म हे हृदय में विराजो सदा।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।106।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपालनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'जगत्पाल' हो भुवन प्राणि को रक्षते।
मुझे सतत रक्षिये जगपते! मनोरक्ष हो।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।107।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पालनामसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेंद्र! जगमध्य 'धर्मसाम्राज्यनायक' तुम्हीं।
सुमोक्षप्रद सार्वभौम जिनधर्म के ईश हो।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।108।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मसाम्राज्यनायकसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-शंभु छंद-

श्रीमान नाम से लेकर धर्म-साम्राज्यनायक तक नामा।
इक शतक आठ नाम सार्थक इंद्रों से स्तुतगुण धामा।।
इन नाममंत्र को जप जप के, बस 'सिद्ध' नाम इक पा जाऊँ।
प्रभु तुम सम शुद्ध अवस्था हो, नहिं बार बार जग में आऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमदादिधर्मसाम्राज्यनायकनामपर्यंताष्टोत्तरशतनामसमन्विताय श्री चंद्रप्रभतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

चन्द्रप्रभ भगवान के समवसरण के गणधर देवों का अर्घ्य

श्री चन्द्रप्रभ के गणपती तेरानवे गणपूज्य हैं।
'वैदर्भ' गणधर प्रमुख उनमें सर्वऋद्धी सूर्य हैं।।
द्वादश गुणों के नाथ द्वादश अंग के कर्ता तुम्हीं।
मैं पूजहूँ नित भक्ति से गुरुभक्ति भवदधि तारहीं।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभतीर्थंकरस्य वैदर्भप्रमुखत्रिनवतिगणधरचरणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

चन्द्रप्रभ भगवान के समवसरण के मुनियों का अर्घ्य

चंद्रप्रभू की सभा में, दोय लाख ऋषिवृंद।
तथा पचास हजार भी, नमत हरे भवफंद।।
नमूँ नमूँ मुनिनाथ को, स्वात्म सुधारस लीन।
गुरु की कृपा प्रसाद से, बनूँ स्वात्म आधीन।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभनाथस्य द्विलक्षपंचाशत्सहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

चन्द्रप्रभ भगवान के समवसरण के गणिनी आर्यिका सहित आर्यिकाओं का अर्घ्य

चंद्रनाथ के समवसरण में श्वेत वस्त्रधारी आर्या।
तीन लाख अस्सी हजार ये इनमें 'वरुणा' प्रमुखार्या।।
लेश्या शुक्ल धरें ये श्रमणी, शुक्लगुणों से मंडित हैं।
जो भविजन इन पूजा करते, वे पद लहें अखंडित हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभनाथस्य वरुणाप्रमुखत्रयलक्षअशीतिसहस्र-आर्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

चन्द्रप्रभ भगवान के शासन यक्ष का अर्घ्य

चन्दाप्रभू के पास 'विजय' यक्ष नित्य हैं।
जिन भक्तगणों के सभी विघ्नों को हरत हैं।।

जिननाथ के शासन के देव आइये यहाँ।
निज यज्ञभाग लीजिए सुख कीजिए यहाँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चंद्रप्रभनाथस्य शासनदेव विजय यक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।।4।।

चन्द्रप्रभ भगवान के शासन देवी का अर्घ्य

चंद्रप्रभू के चरण लीन प्रभुभक्ता शासन देवी हैं।
शुभ नामा 'ज्वालामालिनी' ये धर्मनीतिवेत्री हैं।।
चन्द्रप्रभु पूजा विधान में, आओ आओ माता।
यज्ञभाग मैं अर्पण करता, करो सर्व सुखसाता।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चंद्रप्रभनाथस्य शासनदेवि ज्वालामालिनी हयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।।5।।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय नमः।**

(108 बार, 9 बार या 27 बार सुगंधित पुष्प या पीले चावल से जाप्य करें)

जयमाला

–दोहा –

परम हंस परमातमा, परमानंद स्वरूप।
गाऊँ तुम गुणमालिका, अजर अमर पद रूप।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय श्री चन्द्रप्रभो जिनवर, जय जय तीर्थंकर शिवभर्ता।
जय जय अष्टम तीर्थेश्वर तुम, जय जय क्षेमंकर सुखकर्ता।।
काशी में चन्द्रपुरी सुंदर, रत्नों की वृष्टी खूब हुई।
भू धन्य हुई जन धन्य हुए, त्रिभुवन में हर्ष की वृद्धि हुई।।2।।

प्रभु जन्म लिया जब धरती पर, इन्द्रों के आसन कंप उठे।
प्रभु के पुण्योदय का प्रभाव, तत्क्षण सुर के शिर नमित हुए।।
जिस वन में ध्यान धरा प्रभु ने, उस वन की शोभा क्या कहिए।
जहाँ शीतल मंद पवन बहती, षट् ऋतु के कुसुम खिले लहिये।।3।।

सब जात विरोधी गरुड़ सर्प, मृग सिंह खुशी से झूम रहे।
सुर खेचर नरपति आ आकर, मुकुटों से जिनपद चूम रहे।।
दश लाख वर्ष पूर्वायू थी, छह सौ कर तुंग देह माना।
चिंतित फलदाता चिंतामणि, अरु कल्पतरू भी सुखदाता।।4।।

श्रीदत्त आदि त्रयानवे गणधर, मनपर्ययज्ञानी माने थे।
मुनि ढाई लाख आत्मज्ञानी, परिग्रह विरहित शिवगामी थे।।
वरुणा गणिनी सह आर्यिकाएँ, त्रय लाख सहस अस्सी मानीं।
श्रावक त्रय लाख श्राविकाएँ, पण लाख भक्तिरत शुभध्यानी।।5।।

भव वन में घूम रहा अब तक, किंचित् भी सुख नहिं पाया हूँ।
प्रभु तुम सब जग के त्राता हो, अतएव शरण में आया हूँ।।
गणपति सुरपति नरपति नमते, तुम गुणमणि की बहु भक्ति लिए।
मैं भी नत हूँ तव चरणों में, अब मेरी भी रक्षा करिये।।6।।

–दोहा –

हे चन्द्रप्रभ! आपके, हुए पंच कल्याण।
मैं भी माँगूं आपसे, बस एकहि कल्याण।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भक्ति से श्री चंद्रप्रभ तीर्थेश का अर्चन करें।
वे भव्य निज के ही गुणों का नित्य संवर्द्धन करें।।
इस लोक के सुख भोग कर फिर सर्वकल्याणक वरें।
स्वयमेव 'केवलज्ञानमति' हो मुक्तिलक्ष्मी वश करें।।

।। इत्याशीर्वादः।।

बड़ी जयमाला

-दोहा-

जय जय जय श्री चंद्रप्रभो!, तुम गुणरत्न अनंत।
जो गावें गुणमालिका, वे पावें भव अंत।।1।।

-चौबोल छंद-

मुनिमन समुद्र वर्धन को शशि, मदनजयी मन तमहारी।
चपलचित्त गति हरन हेतु, चन्द्रप्रभ पूजा सुखकारी।।
भवव्याधिशम को सर्वोषधि, केवलज्ञान के अधिनायक।
महामोह निश अंधकार रवि, आश्रित जन यश वर्धनविधु।।2।।

शशि सेवितपद परमशांतियुत, भव्य भवाग्नी शांत करो।
यति मन कमल विकासी शशि सम, धवल वर्ण नमुं चंद्रप्रभो!।।
अज्ञ हूँ फिर भी भक्ति से प्रेरित, कुछ भी स्तव वह भवनाशक।
स्मृति भी तव अनंत दुःखहर, नहिं क्या सिंहशिशु गजमारक।।3।।

प्रभु तुम देखे मन हर्षित, वाणी गद्गद् अरु नयनों से।
हर्षाश्रू झरते मम जन्म, सफल हैं नमुँ अंजलि करके।।
अनंत दुःख से व्याप्त योनि, चौरासी लक्ष में फिर-फिर कर।
पाया धर्म जहाज प्रभो! तव कृपा से तरना भवसागर।।4।।
किये अनंत पंच परिवर्तन, अब थकान है बहु मुझको।
तुम परिवर्तन मुक्त अतः, विनती सुन रक्षा करो विभो।।
कालचक्र से रहित! न तुम-बिन कला काल की इक जावे।
पूर्ण सब कला त्रिजगचंद्र! तनुरहित धवल! तव गुण गायें।।5।।

चंद्र! तेरी चाँदनी सभा पय, सिंधु में न्हाकर हो निष्पाप।
बारह सभा भविक शोभें-प्रभु, नमूँ स्वात्म निर्मलता काज।।
क्रोध शांति से मद मृदुता से, छल ऋजुता से शुचि से लोभ।
बिना शस्त्र जीता स्मरजित्! दोषाकर फिर भी निर्दोष।।6।।

मेघाच्छादित राहु ग्रसित-नहिं रात्री दिवस प्रकाश करें।
कला न घटती प्रभु से जन मन, चंद्रकांतमणि दुग्ध झरें।।

प्रभु तव मुख को देख शोच से, शशि क्षय रोगी हुआ है क्या?
घटती कला उगे निश में, सब जगत्द्योति तुम उदित सदा।।7।।

रवि किरणें जगतापकरी रवि, तापहरन शशि, पर जग में।
ऋषिकुल कुमुद प्रफुल्लित चंद्र! मृत्युतापहर तुम्हीं बने।।
भामंडल छवि से लज्जित, आया कलंक धोने तुम पास।
यदि ऐसा नहिं सकुटुंबी क्यों, तव पद में नित करें निवास।।8।।

जीव नित्य ही या अनित्य ही, क्रिया मोक्ष कर नहिं उनके।
तव मत "स्यात्" के आश्रय से, शिव लहें, न शिव मिथ्यामत से।।
यदि मुक्ती में नाश गुणों का मुक्तीच्छा क्यों मुनिजन के।
यदि पुनरावतार हो तो, सुख ज्ञानादि अनंत कैसे।।9।।

तव मत में प्रत्येक जीव, निज निज कृति से स्रष्टा बनता।
भू जल वायू अग्नि वनस्पति, विविध विविध निज तन रचता।।
विकलत्रय, पंचेन्द्रिय बन बन, कभी शुभ से नर तन पाया।
यदी निजातम ध्यान किया, कृतकृत्य हुआ शिवपद पाया।।10।।

शशिसम धवल गुण स्तुति में, तव महर्षि भी असमर्थ रहें।
मैं फिर कैसे समर्थ होऊँ, नहिं बुद्धी किंचित् मुझमें।।
तथापि किंचित् संस्तव तेरा, अशुभ कर्म विध्वंसक है।
हे चन्द्रप्रभ! नमोस्तु तुमको, सकल ताप संहारक हैं।।11।।

द्वय नय आश्रित ही शिवपथ को, व्रती ग्रहण कर हो भगवान।
नहिं मुक्ती है दुराग्रही को, जयति सदा ही जिनशासन।।
स्वपर भेद विज्ञान यदी है, चरित्र भी होता निश्चित।
स्वात्म सुखामृत पीकर यदि, जन पाते पूर्ण सौख्य अमृत।।12।।

निरतिचार चारित पालन कर, निश्चयनय से स्वात्मा को।
हृदय कमल में नित अनुभवते, पाते वही मोक्षसुख को।।
परमशुद्ध चिद्घन आत्मा में, यदि मन कथमपि हो स्थिर।
स्वयं शुद्धमय अतुल कांतिभर, शोभे यह जग में सुखकर।।13।।

प्रभु मैं जन्म जरा मरणादिक, से हूँ पृथक् स्वयं चिद्रूप।
निश्चयनय से नहिं विकार, मुझमें मैं सिद्ध सदृश सुखरूप।।
"तुम सम मैं" यह बुद्धि तुष्टिप्रद, फिर क्या सिद्ध बने सच में।
प्रभू ध्यान से सिद्धी होवे, यदि चित्त लीन होवे प्रभु में।।14।।

कुबेर निर्मित समवसरण में, तारागणयुत शशि सम आप।
द्विदश सभा बिच सर्व जीव हित, करें देशना शोभें नाथ!।।
मदनजयी जिनपति! दुरितंजय, कर्ममर्मभित्! करुणाह्रद!
हे त्रिभुवनपति मम हृदि तिष्ठो, भव से रक्षा करो तुरत।।15।।

जिनेन्द्र! जिनरवि! जिनचंद्र! शरणागत वत्सल! कृपा करो।
हे जिनपुंगव! भवदधि तारक! झट भवदधि से पार करो।।
सुरकृत पुष्पवृष्टि यह मानो, तारागण आये नभ से।
मैं भी शिव हेतु करूँ अर्पण, तव पद में कुसुमावलि ये।।16।।

हे मुक्तिश्रीरमापते! शरद्-ऋतुपूर्ण चंद्र! जिनचंद्र।
मोह सर्प विषमूर्छित जन को, सुधावृष्टि से करते पुष्ट।।
यदि चंद्रप्रभ गुणगणभक्ती-मुझसे नित की जावे नाथ!।
पूर्ण 'ज्ञानमति' परमानंद सुख, का मुझमें हो स्वयं विकास।।17।।

-दोहा-

प्रभु गुणमाला गाय के, पाऊँ निज सुखधाम।
ज्ञानमती कैवल्य हित, करूँ अनंत प्रणाम।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चंद्रप्रभतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भक्ति से श्री चंद्रप्रभ तीर्थेश का अर्चन करें।
वे भव्य निज के ही गुणों का नित्य संवर्द्धन करें।।
इस लोक के सुख भोग कर फिर सर्वकल्याणक वरें।
स्वयमेव 'केवलज्ञानमति' हो मुक्तिलक्ष्मी वश करें।।

।। इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

-दोहा-

ऋषभदेव भगवान को, नमन करूँ शत बार।
कुंदकुंद गुरुदेव को, वंदूँ भक्ति अपार।।1।।

कुंदकुंद आम्नाय में, गच्छ सरस्वति मान्य।
बलात्कारगण सिद्ध है, उनमें सूरि प्रधान।।2।।

गुरु शांतिसागर हुए, चारित्रचक्री मान्य।
उनके पट्टाचार्य थे, वीरसिंधु प्राधान्य।।3।।

देकर दीक्षा आर्यिका, दिया ज्ञानमति नाम।
गुरुवर कृपा प्रसाद से, सार्थ हुआ कुछ नाम।।4।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, उनतालिस सुखकंद।
द्वादश तिथि वैशाख वदि पूर्ण किया जिनवंद्य।।5।।

चंद्रप्रभू तीर्थेश का, यह विधान सुखकार।
गणिनी ज्ञानमती रचित, सर्वसौख्य दातार।।6।।

तीर्थंकर की अर्चना, करो करावो भव्य।
भव भव भ्रमण समाप्त कर, पावो निज सुख नव्य।।7।।

जब तक मेरू, रवि, शशी, जिनशासन गुणखान।
तब तक भविजन हित करे, चंद्रप्रभू विधान।।8।।

।।श्री चंद्रप्रभ-विधानम् संपूर्णम्।।

भगवान श्री चंद्रप्रभ की आरती

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–आरति करूँ चौबीस जिनेश्वर.....

आरति करूँ श्री चंद्रप्रभु की, आरति करूँ प्रभु जी ।टेक.।।
पहली आरति गर्भकल्याणक-2
पन्द्रह मास रतनवृष्टी की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।1।।
दूजी आरति जन्मोत्सव की-2
मेरू सुदर्शन पर अभिषव की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।2।।
तीजी है निष्क्रमण दिवस की-2
लौकांतिक सुर अनुमोदन की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।3।।
चौथी आरति केवलि प्रभु की-2
द्वादशगणयुत समवसरण की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।4।।
पंचम आरति पंचम गति की-2
मोक्ष धाम संयुत जिनवर की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।5।।
पंचकल्याणकपति प्रभु तुम हो-2
नाश किया संसार भ्रमण को, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।6।।
आरति से भव आरत छुटता-2
करें ''चंदनामति'' प्रभु वन्दन, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।7।।

श्री चन्द्रप्रभु भगवान की शासन यक्षी ज्वालामालिनी देवी की आरती

-ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

आरति करो रे.....
ज्वालामालिनि देवी की, सब मिल आरति करो रे।
आरती करो, आरती करो, आरती करो रे,.....
श्री चन्द्रप्रभू की शासन देवी के पद नम लो रे।।टेक.।।

सम्यग्दृष्टी हो तुम माता, दुख संकट क्षण में हरती।
चन्द्रप्रभू जिन के भक्तों के, मनवांछित पूरे करतीं।
आरती करो, आरती करो, आरती करो रे,.....
उन धर्मनीतिवेत्ता माता की आरति करो रे।।
ज्वालामालिनि देवी की, सब मिल आरति करो रे।।1।।

विजय यक्ष की प्रियकारिणी हो, अतुल शक्ति की धारक हो।
धन सुख संपति संततिदायक, रोग शोक भय नाशक हो।।
आरती करो, आरती करो, आरती करो रे,.....
मनहारी छवि युत उन माता की आरति करो रे।।2।।

दीप, धूप अरु पुष्पहार ले, आरति करने आए हैं।
जिनशासन देवी तुम नमते, आशा यही सजाए हैं।।
आरती करो, आरती करो, आरती करो रे,.....
जिनधर्म में दृढ़ता रहे 'इन्दु' सब आरति करो रे।।3।।

श्री चन्द्रप्रभु के शासन यक्ष विजय देव की आरती

-ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

ॐ जय विजय यक्ष देवा, स्वामी जय विजय यक्ष देवा।
धर्मप्रभावन तत्पर, मंगलमय देवा।।
ॐ जय विजय यक्ष देवा...।।टेक.।।

चन्द्रप्रभू के शासन यक्ष हो, महिमा तव न्यारी, स्वामी.....
जिनभक्तों के रक्षक, छवि है मनहारी।।
ॐ जय विजय यक्ष देवा...।।1।।

रोग शोक भय नाशक, मंगलकर्ता हो....स्वामी.....
धन धान्यादिक वैभव, सब सुखभर्ता हो।।
ॐ जय विजय यक्ष देवा...।।2।।

ज्वालामालिनि के तुम स्वामी, तव महिमा गाऊँ, स्वामी.....
सम्यग्दृष्टी देव तेरी, आरति कर हरषाऊँ।।
ॐ जय विजय यक्ष देवा...।।3।।

यशअर्थी सुतअर्थी भक्तीवश तुमको ध्याते....स्वामी.....
हर मनवाञ्छा पूरी होती, उज्ज्वल यश पाते।।
ॐ जय विजय यक्ष देवा...।।4।।

श्रद्धायुत शुभ भाव सजाकर, द्वार तेरे आए.....स्वामी.....
'इन्दु' कृपा हो हम भक्तों पर, आश यही लाए।।
ॐ जय विजय यक्ष देवा...।।5।।